रोग कैसे फेलता है – इस रोग के विषाणु मुर्गी शाला तक जंगली चिड़ियों, कबुतरों और कौओं या उनकी देखभाल करने वाले व्यक्तियों के द्वारा आते है। उनके पानी और आहार में ये विषाणु प्रवेश कर जातें है। जब स्वस्थ पक्षी इस छूत लगे भोजन या पानी को खाते या पीते है तब यह उनको रोग लग जाता है। इस रोग से ठीक हूई मुर्गी भी इसके विषाणु स्वस्थ पक्षियों तक ले जा सकती है। झुंड में एक बार इस रोग के आंरम्भ हो जाने पर रोगी पक्षियों के थुक बीट आदि में यह रोग स्वस्थ पक्षियों में तेजी से फेलता है।

रोकथाम कैसे करें –

इस रोग से पक्षियों की रक्षा का एक मात्र तरीका रोग के रोकथाम के उपाय करना है, एक बार रोग आंरभ हो जाने पर कोई भी दवा इलाज नही कर सकती। समयानुसार रानीखेत का टीकाकरण चूजों एवं पक्षियों में कराकर निश्चित रुप से इस बीमारी की रोकथाम की जा सकती है।

5. कुक्कुटों में चेचक

सभी उम्र की कुक्कुटें को चेचक रोग, सामान्यतः हो जाता है। यह रोग अक्सर गर्मी में होता है और इससे अनेक पक्षी मर जाते है, वे काफी कमजोर हो जाते है। ऐसे पक्षियों की बढ़वार ठीक से नहीं होती और उनको अन्य रोग आसानी से लग जाते है। यद्यपि यह रोग सब आयु के पक्षियों को लगता है, फिर भी दड़बा घरों से हाल ही में निकाले गए आठ से बारह सप्ताह की आयु वाले चूजों को आसानी से लगता हैं। छोटे चूजों को दड़बा-घरों में भी चेचक रोग लग जाता है। इस रोग से एक बार स्वस्थ हुए पक्षियों को सामान्यतः यह रोग दुबारा नहीं लगता।

यह रोग एक प्रकार के जीवाणुओं के कारण होता है। एक बार आरम्भ हो जाने पर यह रोग बहुत तेजी से फेलता है।

चेचक रोग के परिणाम –

चेचक रोग का आक्रमण होने पर मुर्गी की कलगी, चोंच, पलकों, सिर, टॉगों पर शरीर के ऐसे ही अन्य पंखहीन भागों पर छोटी, सुखी और भूरे रंग की फुंसिया खाल से चिपकी रहती है और अन्त में गहरे रंग की हो जाती है। जब इस रोग का आक्रमण केवल पक्षी की खाल पर होता है, तब पक्षी की बढ़वार रुप जाती है और अण्डें का उत्पादन भी कम हो जाता है, परन्तु आमतौर पर पक्षी मरता नहीं है।

परन्तु जब रोग का आक्रमण अधिक भयानक रुप से होता हे, तब गले, मुँह और ऑखों में हल्के पीले रंग की झिल्ली सी पड़ जाती है। गले और श्वास नली में छोटी-छोटी फुंसियां होने के कारण चूजों का दम घूटता है। जब ऑख पर आक्रमण होता है, तब पूतली सिर भी सूज जाता है। ऐसे सब पक्षी मर जाते है।

चेचक की रोकथाम कैसे करे –

चेचक रोग के एक बार आरम्भ होने पर इसकी रोकथाम नहीं कर सकतें। रोकथाम का एकमात्र उपाय अपने पक्षियों को चेचकरोधी टीका लगवाना है।

चेचक को रोकने के दो किस्म के टीके मिलते है – 'पिजियन पॉक्स वैक्सीन' और 'फाउल पॉक्स वैक्सीन'। पिजियन पॉक्स वैक्सीन से चूजें की सुरक्षा होती है और इसका असर लगभग केवल तीन मास तक रहता है। परन्तु फाउल पॉक्स वैक्सीन से पक्षियों की इस रोग से आजीवन रक्षा होती है।

फाउल पॉक्स वैक्सीन कॉच की सील बन्द नलियों में सूखा मिलता है।

अपने पक्षियों कों टीका गर्मियॉ शुरु होने से पहले ही लगवा दीजिए। टीका लगवाने के लिए अपने ग्राम सेवक या पशु चिकित्सा अधिकारीयों से सम्पर्क में रहे।

1. फाउल पॉक्स वैक्सीन में ग्लिसरीन या नमक का पानी टीका लगाने के ठीक पहले ही मिलाएं।
2. चूजें से डेने के अन्दर कई बार सुई चुभो कर दवा को शरीर में प्रवेश कराइए।
3. दड़बें से दूर वृक्ष की छाया में पक्षियों को टीका लगाकर चूजों को धूप वाले बाड़े में अलग रखिएं, ताकि उनको दड़बें में छूत न लग जाएं।
4. टीका लगाते हुए पक्षियों को स्वयं न पकडिए। बची रह गयी वैक्सीन को जला दीजिए और दवा की खाली शीशी को सुरक्षित जगह में फेंक दीजिए।
5. टीका लगे चूजों से दड़बें की अन्य मुर्गियों या चूजों को यह रोग लग सकता है। इसलिए जब आप यह देखें कि सब पक्षियों के ए क ही समय में टीके नहीं लग सकते, तब दड़बें में टीका न लगाइए।
6. छः से आठ सप्ताह की आयु के चूजों के टीका लगाना सबसे अच्छा रहता है।
7. जब चेचक रोग का खतरा हो, तब एक महीने से कम आयु के सब चूजों और अण्डे देने वाले पक्षियों के यदि उनके पहले कोई टीका न लगा हो तो फिजियन पॉक्स का टीका लगाइयें और कुछ समय बाद पाउल पॉक्स का टीका लगाइए।
8. गर्मी में पैदा हुए चूजें कमजोर होते है, उनको पहले पिजियन पॉक्स का टीका लगाइयें और कुछ समय बाद फाउल पॉक्स का टीका लगाइयें।

कड़कनाथ कुक्कटों बीमारियों को रोकने के तरीके –

बीमार पक्षी की पहचान यह है कि पक्षी सुस्त हो जाता है, भुख का अभाव, पंख नीचे को झुक जाते है तथा पक्षी एंकात में बैठना पसंद करता है।

1. बीमार पक्षी को शेष झुड से पृथक तुंरत करें तथा बीमार एवं स्वस्थ पक्षीयों की देखभाल पृथक-पृथक व्यक्ति करें।
2. बीमार मरे हुए पक्षी को या तो जला दें या इतना गहरा गाड दें कि उसे कुत्तें इत्यादि न खोदने पायें।
3. बीमार पक्षियों के प्रबंध में लगा व्यक्ति अपने हाथों को जिवाणु रहित करके ही स्वस्थ पक्षियों का प्रबंधन करें।
4. दड़बे के सभी उपकरणों को भली प्रकार साफ कर जीवाणु रहित कर लेना चाहिए।
5. पीने के पानी में थोड़ा पोटेशियम परमैगनेट मिलाकर कर पीने को दें।
6. किसी भी पक्षी के बीमार होते ही पशुओं के डाक्टर से सलाह अवश्य लें।